

विचार बिन्दु

भोली भाली सूरत वाले होते हैं जल्लाद भी।

-उर्दू कहावत

प्रतिष्ठित डॉक्टरों की सलाह-लेकिन कुछ जिम्मेदारी, कुछ दिक्कतें डॉक्टरों और मरीजों की भी

पि

छले कुछ दिनों दो प्रतिष्ठित हिंदू डॉक्टरों के अध्यारों में दो प्रतिष्ठित चिकित्सकों के लेख पढ़ें, जिन से मुख्य वर्णनानं परिशिरियों में डाक्टर, बीमार, जर्व और इलाज पर आम तरीकों की कुछ प्रतिक्रियाएं आप तक पहुंचने का साहस हुआ। मैं जिन लेखों की बात कर रहा हूँ उनका शीर्षक है—“बुखार: एक प्रकृत द्रव्य सुरक्षाचार! है” तथा “बेअसर होती दवाएं एक नया संकट खड़ा कर सकती हैं।”

इन लेखों में एंटीबायोटिक दवाओं के न्यूनतम उपयोग की सलाह दी है और इसके ज्यादा उपयोग से होने वाले उत्तराधार की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है। एक लेख की जिस बात पर मुझे यह विवरण के लिए प्रेरित किया गया है—“—बुखार तुरानों की दवा लिकर को थोड़ा बहुत नुकसान हो जाता है तक तक सम्भव हो उनका न्यूनतम उपयोग कीजिये। आपका चिकित्सक यदि एंटीबायोटिक का सुझाव देता है तो उसका अधिकारी पूछें कि जब आप चिकित्सक को परामर्श दूर्घट्टना लेने से विचारित करो तो? फिर परामर्श दूर्घट्टना लेने की विचारित करो है?—शरीर प्रकृति द्वारा निर्मित है तो प्रकृति के अनुसार ही जाना है——बुखार नहीं बुखार के कारण का उपचार करना है।—।

दूसरे लेख की मुख्य बात यह है कि एंटीबायोटिक दवाओं के ज्यादा, अनावश्यक उपयोग से रोग विपरिणाम में उसके अपेक्षित कारणों के लिए स्वयं में कुछ प्रतिवर्तन कर लेते हैं और दवा पर भौंकर हो जाती है। दूसरी व इस से भी आगे नई दवाई आएंगी और रोग विपरिणाम में उसके द्वारा एंटीबायोटिक दवाओं के लिए स्वयं में कुछ प्रतिवर्तन कर लेते हैं और दवा पर भौंकर हो जाती है।

सर्व प्रथम तो यह डॉक्टर का दायित्व है कि जरूरी से अधिक एंटीबायोटिक या अन्य दवाइयां-जांचे निखिली ही क्यों? किन्तु केवल इनका कह देने से समस्या का निदान नहीं होता। बहुत सी बार मरीज स्वयं पुरानी नुस्खा पर्ची पर दवाई लेता रहता है। अधिकारी वापर की सुनिश्चित किया जाना अत्यंत कठिन है कि केमिस्ट चालू नुस्खे पर ही बात दें, विविध नैतिक दृष्टि से यह उनका दायित्व है।

डॉक्टरों की अलोचना नहीं किन्तु कई बार सुनने में आता है कि कुछ लोग अनावश्यक अधिक दवाई-जांचे लिखते हैं। एक ही व्याधि के लिए आवश्यकता से अधिक व एक साथ कई दवाइयां इसलिए लिखते हैं ताकि राहीज जल्दी ठीक हो जाए। इस से डॉक्टर कर लिए गये प्रसार-प्रसार हो जाता है। इसमें इलाज करने को आवश्यक ग्रामीण इलाजों में उपलब्ध शाही शर्करा और शहरों में कार्यत परामर्श देने वालों में व गरीब व निम्न मध्यम वर्गीय परिवर्तों के बीच व्यक्तियों में ज्यादा देखी जाती।

गरीब, अन्यथा व ऐनिक आपदानी भोगियों की अपील समस्या है। उनके लिए बार बार डॉक्टर के पास जाना, बीमार होना बर उपलब्धता व रोजी रोटी की बहुत बड़ी समस्या उपचार कर देता है जब वह उत्तराधार स्वास्थ्य लाभ और रोजगार की गंदी चालू होता है। अधिकारी अपील सुविधा या मजबूरी के चलते परामर्श देता है।

डॉक्टरों की नैतिकता, प्रतिबद्धता की भी कई अत्यंत उम्मदा/उत्कृष्ट कहानियां भी जन सामाज्य से सुनने को मिलती हैं। यह बिना नाम लिखे में कुछ डॉक्टरों की नैतिकता व प्रेरणे के स्टैडिंस के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के बारे में लिखना चाहता है।

सर्व प्रथम तो यह डॉक्टर का दायित्व है कि जरूरी से अधिक एंटीबायोटिक या अन्य दवाइयां-जांचे निखिली ही क्यों?

लिखे ही क्यों? किन्तु केवल इनका कह देने से समस्या का निदान नहीं होता। बहुत सी बार मरीज स्वयं पुरानी नुस्खा पर्ची पर दवाई लेता रहता है।

+ अधिकारी नेतृत्व में उसके अपेक्षित कारणों की अपील समस्या है। सरकारी आदेश से यह सुनिश्चित किया जाना अत्यंत कठिन है कि केमिस्ट चालू नुस्खे पर ही दवा दें, यद्यपि नैतिक

दृष्टि से यह उनका दायित्व है।

डॉक्टर होंगे किन्तु शायद वे डॉक्टरों की कुल संख्या की तुलना में कम होंगे।

बहुत पहले, कीरीब 40 साल पहले कोटा में एक बच्चे के डॉक्टर थे उनका उल्लंघन था कि अस्पताल स्वयं खत्म होने पर चाहे 100 अदमी लाइन में हों, बड़ बड़ काल सर्वत्र मरीज की नहीं देखते थे। दो जाह घर पर देखते थे, शायद 5 रुपये फीस, उसमें भी कोई अत्यंत गरीब-मजदूर नहीं देकते थे।

जयपुर के एक डॉक्टर में एक मरीज लोगों की कुछ जांच करने के लिए पर्याप्त है। उसके बाद उसका नुस्खा देता है। ज्यादा विवरण देता है। उसके बाद उसका नुस्खा देता है। अधिकारी व डॉक्टर के लिए उसका नुस्खा देता है।

जेनेरिक दवाइयों के लोकों की भी कई ग्रामीणों, समस्याएं हैं। सबके बड़ी समस्या यह है कि इनके नाम बहुत बड़े व आसानी से मरीज और शयद, डॉक्टर भी, याद रख सके ऐसे नहीं।

उदाहरण के लिए पहले में एप्सिडीटी एक सामान्य समस्या है और कई संस्कृत नाम है—Pantoprazole gastro and Compartiment prolonged release capsules. आदि। ऐनीक प्रकार के नाम अन्य छोटी छोटी शारीरिक व्याधियों की दवाइयों के हैं जेनेरिक दवाइयों के बड़े नाम होने के कारण निजी क्षेत्र में काम करने वाले अधिकारी डॉक्टर्स एंटीबायोटिक नाम से ही दवाइयों लिखते हैं। अपने घरों पर परामर्श देने वाले सर्वसंपत्ति और जांच करने के लिए पर्याप्त हैं।

इसके लिए सरकार के सभी रसेट्राचाप, कोलेस्ट्रॉल, बुखार, जुकाम, विभिन्न प्रकार के वाइरल बुखार, एंजाना व हृदय रसेट्राचाप की अन्य बोमरियों की व अन्य इसी प्रकार की सामान्य बोमरियों के लिए छोटे व आसानी से यह रसेट्राचाप की नाम दिए जाएं। ऐसा सॉफ्टवेयर/तालिका जैगर हो जिस से जेनांत्रिक स्थिरीय स्टोर से जेनेरिक नाम से बैची-इश्यू की जाए, उसके बिल में साथ यह संस्कृत डॉक्टर्स भी योगी करते हैं।

जेनेरिक दवाइयों के लोकों की अन्यतरी व्याधियों, समस्याएं हैं। सबके बड़ी समस्या यह है कि इनके नाम बहुत बड़े व आसानी से मरीज और शयद, डॉक्टर भी, याद रख सके ऐसे नहीं।

उदाहरण के लिए दूसरे में एप्सिडीटी एक सामान्य समस्या है और कई अदमी लाइन में हो—Pantoprazole gastro and Compartiment prolonged release capsules. आदि। ऐनीक प्रकार के नाम अन्य छोटी छोटी शारीरिक व्याधियों की दवाइयों के हैं जेनेरिक दवाइयों के बड़े नाम होने के कारण निजी क्षेत्र में काम करने वाले अधिकारी डॉक्टर्स एंटीबायोटिक नाम से ही दवाइयों लिखते हैं। अपने घरों पर परामर्श देने वाले सर्वसंपत्ति और जांच करने के लिए पर्याप्त हैं।

जेनेरिक दवाइयों की लोकों की अन्यतरी व्याधियों, समस्याएं हैं। जेनेरिक दवाइयों के लिए छोटे व आसानी से यह रसेट्राचाप की नाम दिए जाएं। ऐसा सॉफ्टवेयर/तालिका जैगर हो जिस से जेनांत्रिक स्थिरीय स्टोर से जेनेरिक नाम से बैची-इश्यू की जाए, उसके बिल में साथ यह संस्कृत डॉक्टर्स भी योगी करते हैं।

जेनेरिक दवाइयों की लोकों की अन्यतरी व्याधियों, समस्याएं हैं। जेनेरिक दवाइयों के लिए छोटे व आसानी से यह रसेट्राचाप की नाम दिए जाएं। ऐसा सॉफ्टवेयर/तालिका जैगर हो जिस से जेनांत्रिक स्थिरीय स्टोर से जेनेरिक नाम से बैची-इश्यू की जाए। इस से मरीज आसानी से धैर्योंके लिए उपयोग किया जाता है।

जेनेरिक दवाइयों की लोकों की अन्यतरी व्याधियों, समस्याएं हैं। जेनेरिक दवाइयों के लिए छोटे व आसानी से यह रसेट्राचाप की नाम दिए जाएं। ऐसा सॉफ्टवेयर/तालिका जैगर हो जिस से जेनांत्रिक स्थिरीय स्टोर से जेनेरिक नाम से बैची-इश्यू की जाए। इस से मरीज आसानी से धैर्योंके लिए उपयोग किया जाता है।

जेनेरिक दवाइयों की लोकों की अन्यतरी व्याधियों, समस्याएं हैं। जेनेरिक दवाइयों के लिए छोटे व आसानी से यह रसेट्राचाप की नाम दिए जाएं। ऐसा सॉफ्टवेयर/तालिका जैगर हो जिस से जेनांत्रिक स्थिरीय स्टोर से जेनेरिक नाम से बैची-इश्यू की जाए। इस से मरीज आसानी से धैर्योंके लिए उपयोग किया जाता है।

जेनेरिक दवाइयों की लोकों की अन्यतरी व्याधियों, समस्याएं हैं। जेनेरिक दवाइयों के लिए छोटे व आसानी से यह रसेट्राचाप की नाम दिए जाएं। ऐसा सॉफ्टवेयर/तालिका जैगर हो जिस से जेनांत्रिक स्थिरीय स्टोर से जेनेरिक नाम से बैची-इश्यू की जाए। इस से मरीज आसानी से धैर्योंके लिए उपयोग किया जाता है।

जेनेरिक दवाइयों की लोकों की अन्यतरी व्याधियों, समस्याएं हैं। जेनेरिक दवाइयों के लिए छोटे व आसानी से यह रसेट्राचाप की नाम दिए जाएं। ऐसा सॉफ्टवेयर/तालिका जैगर हो जिस से जेनांत्रिक स्थिरीय स्टोर से जेनेरिक नाम से बैची-इश्यू की जाए। इस से मरीज आसानी से धैर्योंके लिए उपयोग किया जाता है।

जेनेरिक दवाइयों की लोकों की अन्यतरी व्याधियों, समस्याएं हैं। जेनेरिक दवाइयों के लिए छोटे व आसानी से यह रसेट्राचाप की नाम दिए जाएं। ऐसा सॉफ्टवेयर/तालिका जैगर हो जिस से जेनांत्र

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

इबल इंजन सरकार का संकल्प

श्री भजनलाल शर्मा

माननीय मुख्यमंत्री, राजस्थान

श्री नरेन्द्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री

“ समान शिक्षा का मतलब है... शिक्षा के साथ-साथ संसाधनों तक समान पहुंच, हर बच्चे की समझ और पसंद के हिसाब से उसे विकल्पों का मिलना और स्थान, वर्ग, क्षेत्र के कारण बच्चे शिक्षा से वंचित न रहें। प्रदेश में गांव-ढाणियां और दूरदराज के क्षेत्रों के विद्यालयों में सबको शिक्षा के समान अवसरों के लिए हम संकल्पबद्ध हैं। ”

भजनलाल शर्मा, मुख्यमंत्री, राजस्थान

मोदी की गारंटी

भजनलाल सरकार कर रही साकार

सबकी शिक्षा हमारी जिम्मेदारी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020
को लागू करने के
लिए प्रतिबद्ध



पीएम श्री योजना

402 पीएम श्री विद्यालयों
का उत्कृष्टता केंद्रों के रूप
में विकास



ई-कंटेंट

राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल
के कम्प्यूटराइजेशन से
विद्यार्थियों को अब मोबाइल
एप एवं ई-कंटेंट की घर
बैठे सुविधा



आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग की सहायता

स्कूल बैग, किताबें एवं
यूनिफार्म उपलब्ध कराने
के लिए रुपये 500
की सहायता



निःशुल्क शिक्षा

अब अल्प आय वर्ग, लघु/
सीमान्त/बटाईदार किसानों
और खेतिहार श्रमिकों के
परिवार के छात्र-छात्राओं को
मिलेगी निःशुल्क शिक्षा



नवीन पुस्तकों की व्यवस्था

अंग्रेजी व्याकरण,
जीवन कौशल, कम्प्यूटर
शिक्षा एवं व्यावसायिक
शिक्षा की नवीन पुस्तकों
की व्यवस्था



प्रश्न बैंक

10वीं और 12वीं की
परीक्षाओं की तैयारी के
लिए विद्यार्थियों को
“प्रश्न बैंक” उपलब्ध कराने
की पहल



माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की योजनाएं



- उच्च माध्यमिक परीक्षा में विज्ञान, वाणिज्य एवं कला वर्ग,
वरिष्ठ उपाध्याय, सैकण्डरी एवं प्रवेशिका परीक्षा में उच्चतम
अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति
- प्रदेश के पांच जनजाति जिलों बांसवाड़ा, उदयपुर, झूंगरपुर,
प्रतापगढ़ एवं सिरोही में सर्वोच्च प्राप्तांक वाले छात्र व छात्राओं
को रुपये 1000 प्रतिमाह की दर से 1 वर्ष के लिए छात्रवृत्ति
- सामान्य वर्ग के आर्थिक रूप से पिछड़े प्रतिभावान
विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति योजना

